# सिद्धयोग अभ्यास—दक्षिणा

दक्षिणा के सिद्धयोग अभ्यास में हम श्रीगुरु को आर्थिक रूप में भेंट अर्पित करते हैं। यह अभ्यास मूल रूप से भारत की प्राचीन आध्यात्मिक परम्पराओं पर आधारित है और यह एक साधन है जिसके माध्यम से हम उस ज्ञान के प्रति सर्वोच्च सम्मान व्यक्त करते हैं जो हमें श्रीगुरु से प्राप्त होता है।

हमें श्रीगुरु से जो प्राप्त होता है, वह अनमोल है—हमारे लिए और जिस संसार में हम रहते हैं उसके लिए इसका जो मूल्य है, उसे आँका नहीं जा सकता। इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए भारतीय शास्त्र कहते हैं कि मानव-जन्म मिलना दुर्लभ है, उससे भी अधिक दुर्लभ है अन्तर-आत्मा को जानने की तीव्र ललक और सबसे अधिक दुर्लभ तो है एक ऐसे सद्गुरु का मिलना जो हमें आत्मा के ज्ञान के प्रति जाग्रत कर सकें।

यह अतिदुर्लभ सौभाग्य हमें सिद्धयोग पथ पर प्राप्त हुआ है। सिद्धयोग गुरु, गुरुमाई चिद्विलासानन्द शक्तिपात दीक्षा प्रदान करती हैं यानी वह दीक्षा जिसके द्वारा अन्तर-निहित आध्यात्मिक शक्ति जाग्रत हो जाती है। श्रीगुरुमाई हमें सिद्धयोग की सिखावनियाँ व अभ्यास प्रदान करती हैं जिनसे साधना-पथ का अनुसरण करते हुए हमें मार्गदर्शन मिलता है। श्रीगुरु के प्रज्ञान और अनुग्रह द्वारा हमें स्वयं अपने बारे में गहरी व सच्ची समझ प्राप्त होती है; हमारे जीवन का जो उद्देश्य है, उससे हम और भी अधिक एकलय हो जाते हैं; और हम सिद्धयोग पथ के लक्ष्य को पा सकते हैं जो है आत्म-ज्ञान, मोक्ष की अवस्था। धीरे-धीरे, खुद के प्रति व संसार के प्रति हमारा दृष्टिकोण रूपान्तरित होने लगता है और इसके परिणामस्वरूप न केवल हम, बल्कि हमारे आस-पास की हरेक वस्तु व व्यक्ति लाभान्वित होता है।

दक्षिणा का नियमित अभ्यास, एक साधन है, श्रीगुरु की उदारता के लिए, उनके प्रति अपने हृदय के भाव को व्यक्त करने का—यह एक माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने जीवन में अनवरत रूप से प्रवाहित हो रही कृपा के स्रोत को ठोस रूप में कुछ अर्पित कर सकते हैं। और इससे भी बढ़कर बात यह है कि जैसे-जैसे हम अर्पित करने के इस अभ्यास को करते जाते हैं, हम एक दिव्य कीमियागरी को घटित होते हुए पाते हैं, एक ऐसी प्रक्रिया जो साधना के वास्तविक स्वरूप को परिभाषित करती है। हमारे हृदय ग्रहणशील होते जाते हैं; हम अधिक तत्परता व अन्तर-प्रेरणा से श्रीगुरु की सिखावनियों को आत्मसात् कर पाते हैं; और हम अपनी अन्तर-आत्मा के साथ अपनी पहचान को दृढ़ व मजबूत बनाते हैं।

जब हम दक्षिणा अर्पित करते हैं तो हम सत्य की खोज करने वाले उन असंख्य जिज्ञासुओं को वे दिव्य उपहार उपलब्ध कराने में भी सहायता करते हैं, जो हमें मिले हैं। एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन, जिसका

मूल उद्देश्य है, सिद्धयोग की सिखावनियों को सुरक्षित रखना, उनका परिरक्षण करना और सम्पूर्ण विश्व में उनके प्रसार को सुगम बनाना, हमारे द्वारा अर्पित की गई दक्षिणा को प्राप्त कर इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उसका उपयोग करता है। इस प्रकार, हम जो दक्षिणा अर्पित करते हैं उसके प्रभाव बहुआयामी होते है और व्यापक रूप में बढ़ते रहते हैं। हमारी दक्षिणा सिद्धयोग की सिखावनियों को पूरे विश्व में प्रसरित करने में सहायता करती है और इस तरह सिद्धयोग के अभियान-कार्य [मिशन] को सम्बल प्रदान करने में और सिद्धयोग परादृष्टि [विज़न] की पूर्ति में सहायक होती है।

दक्षिणा का अभ्यास करने के लिए, आप सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर दक्षिणा अर्पित कर सकते हैं और 'सिद्धयोग मासिक दक्षिणा अभ्यास' में भाग ले सकते हैं।

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।